तिब्बत देश

जिन्होंने तिब्बती पहचान को नया जन्म दिया

1972 में तिब्बत के संपर्क में आने के बाद आरंभिक दौर में जिन लोगों के व्यक्तित्व ने मुझे प्रभावित किया उनमें ग्यात्सो शेरिंग भी थे। धर्मशाला की तिब्बती लाइब्रेरी को देखने की उत्सुकता में मुझे उनसे मिलाया गया था। उस समय यह लाइब्रेरी अपने आरंभिक चरणों में थी। लाइब्रेरी का काम देखने वाला यह युवक 35–36 की उम्र के आसपास का था। पर उसके उठने–बैठने और बोलचाल में जैसी आकर्षक स्थिरता और आत्मविश्वास था वह उसे दूसरे अधिकांश तिब्बतियों के मुकाबले एक अलग श्रेणी में रखता था। शुरू में मुझे लगा कि वह तिब्बत के किसी वरिष्ठ राजसी घराने का ऐसा युवा है जिसे भारत में रहकर उच्च शिक्षा पाने का मौका मिला था।

उन दिनों तिब्बत की निर्वासन सरकार, स्कूलों और स्वयंसेवी संगठनों में काम करने वाले अधिकांश तिब्बती युवाओं के व्यवहार से वैसी चंचलता और हताशा एकदम झलकती थी जैसी किसी शरणार्थी के व्यक्तित्व में स्वभाविक तौर पर आ जाती है। बहुत बाद में पता चला कि ग्यात्सो शेरिंग सिक्किम में जन्मे एक भारतीय नागरिक हैं जो भारत सरकार के विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय और सिक्किम सरकार में वरिष्ठ पदों पर काम कर चुके थे। वह तिब्बती राजधानी ल्हासा के भारतीय मिशन में भी काम कर चुके थे। बाद में जब दलाई लामा को चीनी कब्जे वाले तिब्बत से भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी और 1960 में उन्होंने धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासन सरकार की स्थापना की, तब ग्यात्सो ने 1963 में ही अपनी आरामदायक नौकरी और शानदार करियर को छोड़कर निर्वासन सरकार की नौकरी करने का फैसला किया।

यह ऐसा दौर था जब तिब्बत सरकार को अंग्रेजी जानने वाले और बाहरी दुनिया की समझ रखने वाले लोगों की बहुत सख्त जरूरत थी। अपनी इन योग्यताओं और लगन के कारण वह तिब्बत सरकार में सचिव पद तक पहुंचे और बाद में उपमंत्री बनाए गए। सरकार के कई विभागों में काम करने और तिब्बती शरणार्थी समाज के साथ अपने अनुभव में वह इस बात से बहुत प्रभावित थे कि तिब्बत में चीनी सेना की गोलियों और बर्फीली चोटियों से अपनी जान बचाकर भागने वाले आम लोग और भिक्षु अपने साथ महंगी चीजें लाने के बजाए अपनी धार्मिक किताबें, धार्मिक सामग्री और घर के मंदिर की पुश्तैनी मूर्तियां लेकर आए थे। ग्यात्सो इस बात से भी बहुत उत्साहित थे कि इनमें से बहुत सी किताबें, मूर्तियां और धार्मिक सामग्री बहुत मूल्यवान थी। उन्होंने जब अपने साथियों को यह सुझाव दिया कि इस सामग्री से एक लायब्रेरी और संग्रहालय बनाया जाए तो लोगों ने इसे मजाक की तरह लिया। उनमें से कई लोग यह समझने को भी तैयार नहीं थे कि कंगाली, भुखमरी और बीमारियों से लड़ रहे समाज की जरूरतों में लाइब्रेरी की भी कोई जगह हो सकती है। लेकिन जब उन्होंने यह विचार अपने हमउम्र दलाई लामा के सामने रखा तो उन्होंने पूरे उत्साह के साथ अपनी सहमति दे दी। 1972 में ग्यात्सो ने इस काम को शुरू किया। 1974 में उन्हें इस प्रोजेक्ट का निदेशक बना दिया गया। तब से 1998 में अपनी रिटायरमेंट तक टिबेटन लाइब्रेरी ऑफ वर्क्स एंड आर्काइव्स उनकी जिंदगी और हर रोज की दिनचर्या का हिस्सा बन गई। आज यह लाइब्रेरी एक विश्वविद्यालय है और दुनिया में तिब्बती ज्ञान, संस्कृति और शोध का सबसे प्रमुख केंद्र है।

यहां मैं ग्यात्सो शेरिंग जैसी शख्सियत की चर्चा उन्हें श्रद्धजलि देने जैसी रस्म अदायगी के लिए नहीं कर रहा। दरअसल ग्यात्सो जैसा व्यक्ति एक ऐसी ऐतिहासिक घटना का प्रतिनिधि है जिसे दुनिया के इतिहास में हमेशा विशेष आदर और प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा। ग्यात्सो शेरिंग के हाथों उपरोक्त संग्रहालय का निर्माण एक ऐसे अभूतपूर्व अभियान का हिस्सा था जिसे तिब्बत से आए शरणार्थी समाज ने पिछले पचास साल में एक रचनात्मक और मूर्त रूप देने में सफलता प्राप्त की है। ग्यात्से शेरिंग जैसे बीसियों ऐसे कर्मठ लोग इस समाज में हैं जिन्होंने विनाश के मुंह में से एक अनूठी संस्कृति और राष्ट्रीय पहचान को सुरक्षित बाहर खींच कर उसे नया जन्म दे दिया है। इन्हीं उत्साही और कर्मठ लोगों की मेहनत और लगन का यह परिणाम है कि आज तिब्बत की संस्कृति अपने हर मूल रूप और यौवन के साथ भारत में फिर से जीवंत होकर लहलहा रही है।

एक ओर चीनी कब्जे वाले तिब्बत में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और सेना ने तिब्बती संस्कृति के लगभग हर पहलू को पूरी तरह बरबाद करने में कोई कसर नहीं उठा रही थी। और इधर कई तरह के अभावों और समस्याओं के बावजूद मुठ्ठी भर लोगों ने पचास साल के भीतर हर परंपरा के बौद्ध मठों और उनके शिक्षा केंद्रों को नए सिरे से खड़ा कर दिया है। आज तिब्बत की थांका पेंटिंग, रेत की मंडल पेंटिंग, मूर्तिकला, मक्खन की मूर्तिकला, काष्टकला, लोकगीत, संगीत, अन्य मंचीय कलाएं, साहित्य और वास्तुकला जिस मूल रूप में फिर से स्थापित हो चुकी हैं वह सब चीनी कब्जे वाले तिब्बत से कहीं बेहतर दरजे और प्रमाणिकता वाला है।

लाइब्रेरी में दलाई लामा और ग्यात्सो शेरिंग (बाएं)

भारत की जनता और सरकार के लिए भी यह गर्व और संतोष की बात है कि उनकी दी हुई सुविधाओं, छूट, मेहमाननवाजी और प्यार का इस समाज ने सही और रचनात्मक इस्तेमाल करके भारत को दुनिया में मूल तिब्बती संस्कृति का सबसे बड़ा भंडारघर बना दिया है। इसलिए दलाई लामा के इस भारत आगमन को अगर 2500 साल बाद भगवान बुद्ध की अपने घर को वापसी जैसा नाम दिया जाए तो शायद यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। और यह सब ग्यात्सो शेरिंग जैसे उत्साही और समर्पित लोगों के कारण हुआ है। — **विजय क्रान्ति**

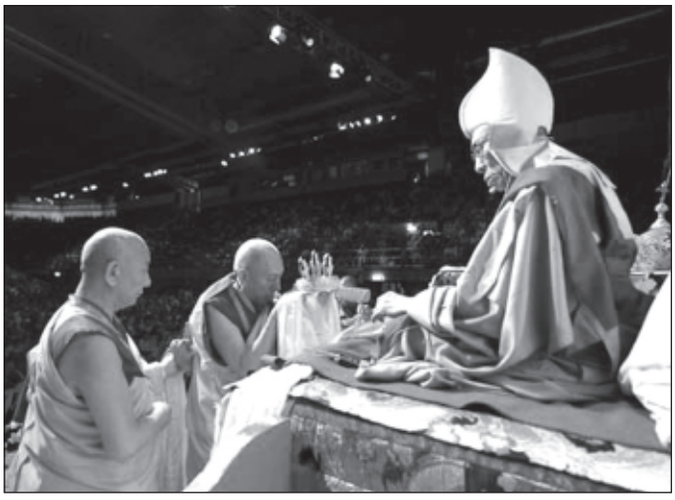

स्विट्ज़रलैंड में दलाई लामा के लिए दीर्घायु प्रार्थना। साथ में प्रो. रिंपोछे – शतायु भव

74वें जन्मदिन पर दलाई लामा की दीर्घायु के लिए दुनिया भर में प्रार्थनाएं

' चिंता न करें –– मैं सौ साल जिऊंगा'

उनकी मृत्यु के बाद चीन द्वारा नया दलाई लामा नियुक्त करने के भय ने तिब्बती नेताओं को यह सोचने पर विवश किया है कि एक बच्चे को दिवंगत शासक और आध्यात्मिक गुरू का अवतार मानने की सदियों पुरानी व्यवस्था को सामप्त किया जाए।

तिब्बत के निर्वासित शासक और बौद्ध धर्मगुरू दलाई लामा ने सोमवार 6 जुलाई को अपना 74 वां जन्मदिन एक विशेष अंदाज में मनाया और आह्लादित होकर कहा कि उनके लिए की जा रही प्रार्थनाएं उनसे कम से कम 100 साल तक जीने के लिए कह रही हैं। नोबल शांति पुरस्कार विजेता दलाई लामा पिछले 50 साल से भारत में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

अपने बूढ़े होते नेता के उत्तराधिकारी की चिंता को परे रख सैकड़ों निर्वासित तिब्बतियों ने नई दिल्ली और हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में जन्मदिन के उपलक्ष्य में प्रार्थनाएं की। दलाई लामा को पिछले दो साल में कई स्वास्थ्य समस्याएं हुईं हैं, जिससे बौद्ध धर्म के उपदेश और तिब्बती स्वतंत्रता संघर्ष को उजागर करने के लिए उनकी व्यस्त अंतरराष्ट्रीय यात्राएं बाधित होती रही हैं।

उनके वृद्ध होने पर यह चिंता होने लगी है कि उनके निधन के बाद निर्वासित तिब्बतियों का नेतृत्व कौन करेगा और उनकी मांगों को आगे कौन बढ़ाएगा? उनकी मृत्यु के बाद चीन द्वारा नया दलाई लामा नियुक्त करने के भय ने तिब्बती नेताओं को यह सोचने पर विवश किया है कि एक बच्चे को दिवंगत आध्यात्मिक गुरू का अवतार मानने की सदियों पुरानी व्यवस्था को सामप्त किया जाए। सोमवार को, हालांकि, धर्मशाला से नई दिल्ली की यात्रा के बाद, दलाई लामा ने भविष्य के बारे में चिंता पर ध्यान नहीं दिया पर उन्होंने अपने समर्थकों को अपने स्वास्थ्य और लंबे जीवन की प्रार्थना के लिए धन्यवाद दिया और मजाकिया लहजे में कहा कि वे जीवन भर उनके साथ रहेंगे। उल्लास और आनंद से लबरेज दलाई लामा ने अपने भाषण में समर्थकों से कहा, "मैं हजार सालों के बारे में तो नहीं जानता, पर कम से कम 100 सालों के बारे में जानता हूं।"

उन्होंने समर्थकों से रेशमी स्कार्फ के तोहफे को स्वीकार किया और संगीतमय प्रदर्शन भी देखा। तिब्बती बौद्धों के बीच सफेद या क्रीम रेशमी स्कार्फ का उपहार सम्मान का द्योतक समझा जाता है। दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती सरकार से संबंधित पहाड़ी शहर धर्मशाला में सैकड़ों समर्थक त्सुगलाखांग मंदिर में धार्मिक नेताओं के भाषण सुनने के लिए एकत्रित हुए।

जगह–जगह 'दलाई लामा दीर्घायु हो' लिखे बैनर टंगे थे और तिब्बतवासी इस अवसर पर अपने पारंपरिक पोशाकों में थे। समारोह में स्कूली बच्चों और तिब्बती कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम और नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। मिठाइयां वितरित की गईं और समारोह में शामिल होने के लिए लोगों ने अपने कारोबार बंद कर रखे थे।

साठ–वर्षीय निर्वासित तिब्बती ल्हाकपा ने कहा, ''हम परमपावन दलाई लामा का जन्मदिन मनाकर प्रसन्न हैं। साथ ही मुझे इस बात का दुख भी है कि यह मुझे स्मरण कराता है कि हम लंबे समय से निर्वासित हैं।'' निर्वासित सरकार के मंत्रिमंडल 'काशाग' ने कहा कि स्वायत्तता के मुद्दे पर दलाई लामा के साथ बातचीत के लिए चीन की अनिच्छा इस संदेह को जन्म देती है कि बीजिंग तिब्बत की समस्या का समाधान चाहता भी है या नहीं।

मंत्रिमंडल ने अपने एक बयान में कहा है, ''इसलिए, हमने अब अपना ध्यान चीनी लोगों की ओर केंद्रित कर दिया है।'' लेकिन तिब्बती मंत्री ने कहा कि चीन सरकार से एक बार स्पष्ट संकेत प्राप्त होने के बाद उसके साथ वार्ता जारी रहेगी। दोनों पक्षों के बीच 2002 से आठ दौरों की वार्ता हुई है।

दलाई लामा तिब्बत पर चीनी शासन के खिलाफ 1959 में एक विफल जनक्रान्ति के बाद भागकर भारत धर्मशाला आ गए थे। 1960 से वह यहीं रह रहे हैं। एक युवक तेनजिन धोएन ने कहा, ''तिब्बतवासी यह सोंचना नहीं चाहते कि परमपावन दलाई लामा एक दिन हमारे बीच नहीं रहेंगे। हम उनके लिए लंबे जीवन की प्रार्थना करेंगे।''

(साभार – मुनीजा नकवी की रिपोर्ट पर आधारित)

दलाई लामा पोलैंड की मानद नागरिकता से सम्मानित किए गए

वारसा नगर के समारोह में लेख़ वालेज़ा भी आए

वारसा, 29 जुलाई तिब्बत के पूर्व शासक और बौद्ध आध्यात्मिक गुरू दलाई लामा को पोलैंड की राजधानी वारसा की मानद उपाधि प्रदान की गई। नाजियों द्वारा तबाह किये गए और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद फिर से बनवाए गए शाही किले में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।

स्थानीय मेयर हन्ना ग्रोनकिएविक्ज वाल्ट्ज ने समारोह में उपस्थित अतिथियों को संबोधित करते हुए कहा, ''हम वारसा वासियों को इस बात का गर्व है कि आज से चौदहवें दलाई लामा हमारे शहर के नागरिक हैं। इस अवसर पर पोलैंड के वाम–विरोधी अंतर्राष्ट्रीय आइकॉन लेख़ वालेसा भी उपस्थित थे। वारसा के सिटी काउंसिल की ओर से जारी बयान में कहा गया है, ''एक शहर के काउंसिलर होने के नाते हमारा नैतिक धर्म है कि हम उस व्यक्ति को सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान करें, जो अपने देश की आजादी और संप्रभुत्ता के लिए जी–तोड़ मेहनत कर रहा हो। उनके इस संघर्ष के महत्व को हम समझते हैं क्योंकि हम भी बीस साल से आजाद हैं।''

सम्मान पाने के बाद दलाई लामा ने कहा, ''मुझे अत्यधिक खुशी है और मैं इस महान शहर का नागरिक बनने पर खुद को सम्मानित महसूस कर रहा हूं।'' दलाई लामा ने पोलैंड पर द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा खूनी तरीके से किये गए कब्जे और उसके परिणामस्वरूप सोवियत संघ द्वारा साम्यवाद लागू किये जाने का उल्लेख करते हुए कहा, ''इसका कोई मतलब नहीं कि पोलैंड को कितनी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। असली बात यह है कि हर हाल में पोलैंड का संकल्प डिगने नहीं पाया।''

पोलैंड के पूर्व राष्ट्रपति और नोबल पुरस्कार विजेता लेख़ वालेसा ने इस अवसर पर कहा कि ''हमें इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं कि जिस तरह हमलोगों को आजादी मिली, उसी तरह आपका देश भी एक दिन आजाद हो जाएगा और एक दिन तिब्बत की धरती पर मुझे एक दिन इसी तरह मानद सम्मान प्रदान किया जाएगा।'' उन्होंने चुटकी लेते हुए दलाई लामा की ओर इशारा करते हुए कहा, ''इसलिए जल्दी कीजिए, मैं बूढा होता जा रहा हूं।''

दलाई लामा पिछली बार दिसम्बर 2008 में पोलैंड की यात्रा पर उस वक्त आए थे, जब वालेसा को नोबल पुरस्कार मिलने के 25 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किया गया था।

दलाई लामा ने चीन के भीतर तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता प्रदान करने की मांग को एक बार फिर दोहराया और इस बात पर भी जोर दिया कि दुनिया के अन्य देशों की भी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे चीन को वैश्विक लोकतंत्र की मुख्यधारा में शामिल होने को प्रोत्साहित करें। उनकी यह पोलैंड यात्रा तीन दिन चली।

पोलैंड के पूर्व राष्ट्रपति और नोबल पुरस्कार विजेता लेख़ वालेसा ने इस अवसर पर कहा कि ''हमें इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं कि जिस तरह हमलोगों को आजादी मिली, उसी तरह आपका देश भी एक दिन आजाद हो जाएगा और एक दिन तिब्बत की ध रती पर मुझे एक दिन इसी तरह मानद सम्मान प्रदान किया जाएगा।'' उन्होंने चुटकी लेते हुए दलाई लामा की ओर इशारा करते हुए कहा, ''इसलिए जल्दी कीजिए, मैं बूढा होता जा रहा हूं।''

आस्ट्रेलियाई सांसदों की दलाई लामा से भेंट को विदेश मंत्री का समर्थन

सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड, 05 जुलाई आस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री स्टीफन स्मिथ ने चीन की आपत्तियों के बावजूद दलाई लामा से आस्ट्रेलियाई सांसदों के प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात को पूरी तरह उचित कदम बताया है।

चीनी अधिकारियों द्वारा आस्ट्रेलियाई सांसदों के प्रतिनिधिमंडल की भारत में दलाई लामा से मुलाकात की घटना की निंदा के जवाब में श्री स्मिथ ने नाइन नेटवर्क को दिये साक्षात्कार में कहा, ''मेरा रवैया स्पष्ट और सीधा है। यह आस्ट्रेलिया की लोकतांत्रिक शक्ति का द्योतक है। एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल की भारत की यात्रा करना और वहां दलाई लामा से संपर्क स्थापित करना पूरी तरह उचित कदम है।''

श्री स्मिथ ने कहा कि आस्ट्रेलिया ने दलाई लामा से बातचीत करने तथा तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर अंकुश लगाने के वास्ते चीन से जोरदार अपील की है। उन्होंने कहा कि आस्ट्रेलिया ने चीन से यह भी कहा है कि उसे अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने को न्यायोचित ठहराने की दिशा में और पारदर्शी रवैया अपनाना चाहिए। हम चीन के साथ सकारात्मक, लाभकारी और बेहतर संबंध चाहते हैं।

उन्होंने कहा, ''उसकी अर्थव्यवस्था जिस तरह से बढ़ रही है, तो जाहिर है कि उसकी सैन्य क्षमता, सैन्य तैनाती और सैन्य शक्तियां बढेंगी। यह सहज है लेकिन चीन को चाहिए कि इसका स्पष्ट खुलासा करे।'' उन्होंने कहा कि चीन सौहार्दपूर्ण वातावरण की बात करता है, लेकिन आस्ट्रेलिया का कहना है कि चीन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदार देश बनकर दिखाए। उन्होंने कहा, ''हमें भरोसा है कि चीन ऐसा ही करेगा। हालांकि मानवाधिकार के मुद्दे सहित बहुत सारे ऐसे बिन्दु हैं जिनपर चीन और आस्ट्रेलिया के अलग–अलग विचार हैं।''

उरूम्ची में बसे हान चीनियों ने 800 उइगुरों की हत्या की – पुलिस के हत्यारे सहयोगी

चीनी पुलिस और सेना की निर्दयता ने शिंजियांग में मौत का खेल कैसे खेला?

राबिया कादिर की कलम से वास्तविक कहानी

शिनजियांग के पार्टी सचिव, वांग लेचुआन ने अशांति के लिए मुझे दोषी बताया है जबकि यह उइगुरों पर हो रहे बरसों के चीनी दमन का परिणाम है। यह इस बात की भी पुष्टि करता है कि चीनी नेताओं की कानून के शासन के पालन में कोई रूचि नहीं है। और यही बात वर्तमान उइगुर असंतोष का कारण है।

07 जुलाई, 2009 जब चीनी सरकार इस सप्ताह उरूम्ची और बाकी पूर्वी तुर्किस्तान में अशांति को दबाने के सवाल पर पीछे मुड़कर देखेगी तो संभवतः वह दुनिया को यही कहेगी कि उसने स्थिरता कायम रखने के लिए ऐसा किया है। चीन शायद यह स्पष्ट करना भूल जाए कि हजारों उइगुरों ने अन्याय के खिलाफ बोलने का जोखिम क्यों उठाया या विरोध के अपने अधिकार के उपयोग से सैकड़ों उइगुर क्यों मर गए?

5 जुलाई रविवार को छात्रों ने उरूम्ची के डोंग कोरूक (एरदाचिआओ) क्षेत्र में एक विरोध प्रदर्शन किया। वे चीन के दक्षिणी गुआंगडोंग प्रांत में शाओगुआन में एक खिलौने की फैक्ट्री में उइगुरों की सामूहिक हत्या और पिटाई के विरोध में चीनी अधिकारियों की अकर्मण्यता पर असंतोष जाहिर करने और मारे गए एवं घायल लोगों के परिवार के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने के लिए ऐसा कर रहे थे। वह शांतिपूर्ण सभा उस वक्त हिंसक हो गई जब भीड़ से कुछ लोगों ने चीनी पुलिस की निर्दयता पर प्रतिक्रया व्यक्त की। मैं निस्संदेह प्रदर्शन के दौरान उइगुरों द्वारा की गई हिंसा की उतनी ही निंदा करती हूं जितना प्रदर्शनकारियों के खिलाफ चीन द्वारा अत्यधिक बल प्रयोग की। शिनजियांग स्वायत्तशासी क्षेत्र के पार्टी सचिव, वांग लेचुआन ने अशांति के लिए मुझे दोषी बताया है जबकि यह उइगुरों पर हो रहे बरसों के चीनी दमन का परिणाम है। यह इस बात की भी पुष्टि करता है कि चीनी अधिकारियों की कानून के शासन के पालन में कोई रूचि नहीं है। और यही बात वर्तमान उइगुर असंतोष का कारण है।

रविवार के विरोध में चीन की निर्मम प्रतिक्रिया उसके विचारों का द्योतक है। पूर्वी तुर्किस्तान में उइगुर सूत्र कहते हैं कि उरूम्ची में 400 उइगुर पुलिस की गोलीबारी और पिटाई में मारे गए हैं। घायलों की वास्तविक संख्या ज्ञात नहीं है। कर्फ्यू लागू कर दिया गया है, टेलिफोन लाइनें काट दी गई हैं और शहर में तनाव है। उइगुरों ने मुझसे यह रिपोर्ट करने के लिए संपर्क किया कि चीनी अधिकारी उइगुर घरों की तलाशी ले रहे हैं और पुरूष उइगुरों को गिरफ्तार कर रहे है। वे बता रहे हैं कि उइगुर लोग अपने गृहप्रांत की राजधानी की गलियों में भी घूमने से डर रहे हैं।

अशांति फैलती जा रही है। काशगर, यारकंद, अक्सु, खोतान और कारामे के नगरों में भी अशांति फैल चुकी है। लेकिन चीनी दुष्प्रचार के कारण इस सबकी पुष्टि करना संभव नहीं है। काशगर इन नगरों में सर्वाधिक बुरी तरह प्रभावित रहा है और अपुष्ट रिपोर्टों से पता चलता है 100 से अधिक उइगुर वहां मारे गए हैं। सेना काशगर में प्रवेश कर गई है और नगर में सूत्र बताते हैं कि प्रत्येक उइगुर के मकान पर दो चीनी सैनिक रखे गए है।

हाल के उइगुर दमन ने एक प्रजातीय स्वर धारण कर लिया हैं। चीनी सरकार हान चीनियों के बीच राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रोत्साहित करने के लिए जानी जाती है क्योंकि दिवालिया हो चुकी कम्युनिस्ट विचारधारा को बदलने के लिए ही इसे प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह इसी राष्ट्रवाद एक सबूत था कि हान चीनियों की भीड़ ने शाओगुआन में उइगुर युवा मजदूरों पर आक्रमण किया।

(इस हत्याकांड की वीडियो देखने के लिए यूट्यूब की इस वेबसाइट को देखें – http://www.youtube.com/watch?v=6_PJTO2k0PM –संपादक)

हान चीनियों के बीच प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवाद का यह आधिकारिक प्रोत्साहन रास्ते को आगे बहुत कठिन बनाता है। विश्व उइगुर कांग्रेस, जिसका नेतृत्व मैंने किया, दलाई लामा और तिब्बती आंदोलन को बहुत पसंद करता है, मानवाधिकारों और लोकतंत्र के लिए वास्तविक सम्मान के साथ स्व–निर्णय की शांतिपूर्ण स्थापना की वकालत करता है। हान चीनियों और उइगुरों को विश्वास, पारस्परिक सम्मान और समानता पर आधारित एक संवाद की आवश्यकता है। पर चीनी सरकार की नीतियों के अंतर्गत, यह संभव नहीं है।

पूर्वी तुर्किस्तान में खराब होती स्थिति को ठीक करने के लिए चीन सरकार को पहले शाओगुआन की हत्याओं की सही जांच करनी चाहिए और न्याय के लिए हत्या–आरोपियों को सामने लाना आवश्यक है। उरूम्ची अशांति के लिए एक स्वतंत्र और खुली जांच को संचालित करने की भी आवश्यकता है, ताकि हान चीनी और उईगुर रविवार की घटनाओं को समझ सकें और आपसी समझ के तरीके विकसित कर सकें।

अमेरिका को इस प्रक्रिया में एक मुख्य भूमिका निभानी होगी। इसने दबे कुचलों के लिए हमेशा आवाज उठाई है। इसी कारण यह चीनी सरकार के समक्ष उइगुर मामला पेश करता रहा है। इस गंभीर मोड़ पर अमेरिका को उरूम्ची में हिंसा की निंदा करनी चाहिए और वहां एक वाणिज्य दूतावास स्थापित करना चाहिए। एक वाणिज्य दूतावास भयानक दमन के वातावरण में स्वतंत्रता के प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य कर सकता है और उइगुरों के विरूद्ध मानवाधिाकारों के उल्लंघन पर नियमित नजर रख सकता है।

इस लेख को लिखते हुए, हमारे वाशिंगटन कार्यालय में खबरें पहुंच रही हैं कि 4000 हान चीनियों ने सोमवार (6 जुलाई)को उरूम्ची की गलियों में बदले की कार्रवाई के लिए उइगुरों के खिलाफ हिंसा की। मंगलवार को और अधिक हान चीनी सड़कों पर आ गए। जैसे ही हिंसा भड़की, मैंने सभी मासूम जानों के लिए दर्द महसूस किया। मैं डरती हूं कि चीनी सरकार इस दर्द का अनुभव नहीं करेगी क्योंकि यह अपनी इस घटना की अपने तरह से व्याख्या कर रही है। यह आत्म–निरीक्षण की कमी के कारण है, जिसकी वजह से हान चीनी और उइगुर बंटे हुए हैं।

(सुश्री कादीर विश्व उइगुर कांग्रेस की अध्यक्ष हैं और चर्चित पुस्तक ''ड्रैगन फाइटर'' की लेखिका हैं। यह एक ऐसी महिला की कहानी है जो शांति के लिए चीन से संघर्ष करती है – सं.)

पूर्वी तुर्किस्तान में चीनी हिंसा पर आईसीटी का बयान

08 जुलाई, इंटरनेशनल कैम्पेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) रक्तपात और मौतों पर खेद व्यक्त करता है और उइगुर प्रदर्शनकारियों के खिलाफ प्रतिबंधों और हिंसा के अनुचित उपयोग की निंदा करता है।

तिब्ब्त में विरोध–प्रदर्शन शुरू होने के एक साल से अधिक होने के बाद पिछले कुछ दिनों से शिनजियांग (पूर्वी तुर्किस्तान) में उरूम्ची और काशगर की गलियों में भयानक हिंसा और दमन का बोलबाला है, जो तिब्बितयों और उइगुरों के प्रति चीन सरकार की नीतियों के ध्वस्त होने का एक प्रमाण है।

इंटरनेशनल एडवोकेसी संगठन इंटरनेशनल कैम्पेन फॉर तिब्बत की उपाध्यक्ष, मेरी बेथ मर्की ने कहा, ''चीनी सरकार उइगुर और तिब्बती लोगों की औचित्यपूर्ण शिकायतों पर ध्यान देकर, स्वशासन के उपायों की अनुमति देकर और उनकी विशिष्ट पहचान को कायम रखने के उपाय करके ही असंतोष, अशांति और हिंसक दमन की समाप्ति कर सकती है।''

पूर्वी तुर्केस्तान की नवीनतम घटनाओं और विश्लेषण के लिए <http://www.uhrp.org/>, वेबसाइट देखें.

दलाई लामा ने संयम की अपील की, जिनजियांग पीड़ितों के लिए प्रार्थना

धर्मशाला, 08 जुलाई परमपावन दलाई लामा ने कहा है कि वह पूर्वी तुर्किस्तान (जिनजियांग) में बदतर होती स्थिति, विशेष रूप से जिंदगियों के दुखद अंत, पर अत्यंत चिंतित और दुखी हैं।

दलाई लामा ने एक बयान जारी कर कहा है, ''मैं चीन सरकार से अपील करता हूं कि वह समझदारी और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए गंभीर स्थितियों से निपटे।'' उन्होंने आगे कहा, ''मैं जान गवांने वालों, उनके परिजनों और इस दुःखद घटना से प्रभावित अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करता हूं।'' जिनजियांग उइगुर स्वायत्तशासी क्षेत्र की राजधानी उरूम्ची में रविवार 5 जुलाई को प्रारंभ हुए इस विरोध में कम से कम 156 लोग मारे गए थे और 1000 से अधिक लोग घायल हुए थे। यह जानकारी चीन की आधिकारिक न्यूज एजेंसी शिन्हुआ ने दी।

लेकिन उइगुर समूह ने मौतों की संख्या 840 बताई है। आईएएनएस की रिपोर्ट के अनुसार, वे यह भी कहते हैं कि अधिकांश मृतक उइगुर थे। उरूम्ची के इन दंगों में चीनी सेना और पुलिस को वहां बसाए गए हान चीनियों का पूरा समर्थन मिला था। उरूम्ची में स्थानीय उइगुरों का एक समूह चीन के गुआंगदोंग प्रांत में उइगुर युवाओं की हान चीनी युवाओं की भीड़ द्वारा हत्या की जांच की मांग कर रहा था। यह हत्याकांड 25 जून को गुआंगदोंग के गुआंगजू शहर में हुआ था जहां शिनजियांग (पूर्वी तुर्किस्तान) से स्थानीय सरकार द्वारा भेजे गए युवा उइगुर मजदूरों के खिलाफ हान युवा मजदूरों ने दंगा किया था। ये उइगुर मजदूर वहां की एक खिलौने की फैक्ट्री में काम करते थे। गुआंगजू की प्रतिक्रिया में उरूम्ची में फैली अशांति से घबराए हुए चीनी राष्ट्रपति हु जिंताओ अपनी इटली यात्रा को बीच में ही छोड़कर चीन लौट गए थे। वहां उन्हें जी 8 की शिखर बैठक में भाग लेना था।

''मैं चीन सरकार से अपील करता हूं कि वह समझदारी और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए गंभीर स्थितियों से निपटे।.... मैं जान गवांने वालों, उनके परिजनों और इस दुःखद घटना से प्रभावित अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करता हूं।'' 5 जुलाई को प्रारंभ हुए इस विरोध में कम से कम 156 लोग मारे गए थे लेकिन उइगुर समूह ने मौतों की संख्या 840 बताई है।

तिब्बत की धरोहर को समर्पित एक जीवन

ग्यात्सो शेरिंग की अनूठी जीवन यात्रा

(तिब्बत के इतिहास में जिन लोगों को उनके किसी अनूठे योगदान के लिए याद किया जाएगा उनकी सूची में ग्यात्सो शेरिंग का नाम ऊपर के नामों में होगा। निर्वासन में केंद्रीय तिब्बती लेखन और पुरातत्व पुस्तकालय की स्थापना और उसे आज के सम्मानित अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक लाने में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया। गंगतोक में जन्मे श्री शेरिंग भारतीय नागरिक थे। पारिवारिक आस्था संस्कार तिब्बती–बौद्ध का था। एक शिक्षित और होनहार युवा के रूप में भारत के विदेश विभाग की आकर्षक नौकरी को बीच में छोड़कर उन्होंने परमपावन दलाई लामा के नेतृत्व में तिब्बत देश के घोर संकटकाल में अपना योगदान देने का फैसला किया। इस संकल्प को उन्होंने अपनी लगन, कर्मठता, रचनात्मक कल्पनाशीलता और नेतृत्व क्षमता के साथ जीवन पर्यंत निभाया। 'तिब्बत–देश' उन्हें आदर और प्यार भरी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत स्मृति लेख सुश्री रेबेका नॉविक का है जो तिब्बत पर एक चर्चित अंतर्राष्ट्रीय रेडियो कार्यक्रम 'टिबेट कनेक्शन' की प्रोड्यूसर और संपादक हैं– विजय क्रान्ति)

तिब्बती शरणार्थियों की पीठों पर लदकर बौद्ध धर्म से संबंधित पाठन सामग्रियां और पुस्तकें 1959 से ही भारतीय उपमहाद्वीप में पहुंचने लगी थीं। त्शेरिंग इस बात से काफी प्रभावित थे कि अपने घर–बार छोड़कर निर्वासन में आने वाले तिब्बती नागरिक नकदी या आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण सामान अपने साथ लाने के बजाय धार्मिक सामग्रियां, बौद्ध धर्म से जुड़ी पाठन सामग्रियां, मूर्तियां और ध र्म से जुड़ी पेंटिंग लेकर आ रहे थे।

जब युवा ग्यात्सो शेरिंग ने एक पुस्तकालय निर्माण के विचार के साथ तिब्बती सरकार का दरवाजा खटखटाया था तब उन्हें सनकी कहकर दरकिनार कर दिया गया था। उन लोगों की राय थी, ''यह असंभव है। तुम केवल ख्वाब देख रहे हो।'' शेरिंग ने उनकी बातों पर विचार किया होगा, फिर भी उसने यही सोचा, ''मैं इसके लिए प्रयास करता रहूंगा।''

साल 1967 था। यह वैसा समय था जब तिब्बतवासी निर्वासन के प्रारम्भिक दिनों और चुनौतियों से जूझ रहे थे। तिब्बत सरकार का पुनर्गठन हुआ था और उसके समक्ष चीन के कब्जे वाले तिब्बत से भागकर आने वाले करीब एक लाख त्रस्त और कंगाल शरणार्थियों को हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी थी। आर्थिक संकट से गुजर रही तिब्बती सरकार इसके लिए संघर्ष करती नजर आ रही थी। लेकिन शेरिंग की नजरें भोजन और आवास की तात्कालिक जरूरतों से दूर टिकी थीं।

तिब्बती शरणार्थियों की पीठों पर लदकर बौद्ध धर्म से संबंधित पाठन सामग्रियां और पुस्तकें 1959 से ही भारतीय उपमहाद्वीप में पहुंचने लगी थीं। शेरिंग इस बात से काफी प्रभावित थे कि अपने घर–बार छोड़कर निर्वासन में आने वाले तिब्बती नागरिक नकदी या आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण सामान अपने साथ लाने के बजाय धार्मिक सामग्रियां, बौद्ध धर्म से जुड़ी पाठन सामग्रियां, मूर्तियां और धर्म से जुड़ी पेंटिंग लेकर आ रहे थे।

शेरिंग को इस बात की गहरी चिंता थी कि तिब्बत पर आधिपत्य जमा चुकी कम्युनिस्ट ताकतें हजारों वर्ष पुरानी तिब्बती धरोहरों को नष्ट करने में जुटी हुई थीं। प्राचीन मिस्र में एलेक्जेन्द्रिया के विख्यात पुस्तकालय की कहानियों से प्रभावित होकर शेरिंग भी तिब्बती धरोहरों को संरक्षित करने के लिए एक सुरक्षित 'आगार' बनाना चाहते थे। उन्होंने अंततः इस असंभव से लग रहे ख्वाब से परमपावन दलाई लामा को अवगत कराया तो उन्होंने इसे हरी झंडी प्रदान कर दी। शेरिंग ने याद किया, ''वह बहुत खुश थे। उन्होंने कहा था– परियोजना को आगे बढ़ाओ।''

लेकिन कुछ समस्याएं भी थीं। पहले तो धन की कमी थी। त्शेरिंग ने कहा, ''हमारे पास धन का अभाव था। एक–एक पैसे को हम मोहताज थे।'' पश्चिमी देशों की यात्रा के दौरान उन्होंने समर्थकों को अपने दृष्टिकोण से अवगत कराने का सदैव प्रयास किया, लेकिन उन्हें लगभग यही जवाब मिलता कि प्रस्तावित पुस्तकालय शैक्षणिक प्रतिष्ठान होने के बजाय धार्मिक प्रतिष्ठान बनकर रह जाएगा। लेकिन शेरिंग ने निराशा का दामन नहीं थामा और अंततः उन्हें कैथोलिक चर्च में एक सहयोगकर्ता मिल गया, जिसे धार्मिक संग्रहालयों का महत्व पता था। त्शेरिंग ने कहा, ''वे लोग बहुत उदार थे।'' इसके बाद अन्य दानदाता भी उनके साथ जुड़ने लगे।

चीनी सैनिकों की गोलियों को चकमा देकर और हिमालय के दुर्गम दर्रों से होकर गुजरने के दौरान बर्फबारी और बारिश के कहर को धता बताकर भारतीय उपमहाद्वीप पहुंचने वाले तिब्बती जो पुस्तक या पांडुलिपियां वहां से लेकर आए, उन्हें इस पुस्तकालय में रखा गया, जिन्हें आज भी देखा जा सकता है। त्शेरिंग के पास तितर–बितर और फटी पांडुलिपियां पहुंचने लगीं, जिनमें से कुछ के पन्ने गायब होते थे, तो बर्फ और बारिश की वजह से कुछ के शब्द अपना अस्तित्व खो बैठे थे। निश्चित तौर पर पुस्तकों की सूची बनाना और उसके संग्रहण से कहीं ज्यादा थी ये चुनौतियां। यह इस तरह की पहली परियोजना थी।

तिब्बत के बड़े–बड़े मठों में दशकों तक अध्ययन करने वाले विद्वानों और बौद्धभिक्षुओं के एक दल को इकट्ठा किया गया। शेरिंग ने कहा कि वे लोग सुबह से देर रात तक गायब पाठ्यांशों को जोड़ते रहते। शेरिंग ने इस बात को लेकर खेद प्रकट किया कि कम्प्यूटर युग में तिब्बती सुलेखन तेजी से खत्म होने की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा, ''तिब्बती सुलेख में ताकत है। इसमें ऊर्जा है। लेकिन मुझे अब इसकी कमी खल रही है। लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं?

समय बदल चुका है।''

पांडुलिपियों के पुनर्संयोजन में जुटी टीम उस कुटिया में रह रही थी, जिसमें बिजली की व्यवस्था भी नहीं ही थी। किसी समय उसमें गायें बांधी जाती थीं। उन्होंने कहा, ''हम निहायत मुफलिसी और फ़ाकामस्ती में रह रहे थे, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं थी। हम यह नहीं जानते थे कि कल क्या खाएंगे, इसके बावजूद इस योजना पर हमने सारी रकम लगा दी थी। लैम्प का तेल जुटाना हमारे लिए खाने से ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य था। हमारे लिए प्रत्येक दिन उत्साह से ओत–प्रोत था, क्योंकि प्रत्येक दिन हम नयी–नयी और अनोखी पांडुलिपियां ढूंढ निकाल पा रहे थे।''

ग्यात्सो शेरिंग को याद है कि उस वक्त उन्हें और उनकी टीम को परमपावन दलाई लामा ने कितना सहयोग प्रदान किया था।'' उन्होंने कहा, ''दलाई लामा व्यक्तिगत तौर पर हमलोगों के पास आते थे और हममें से हर किसी को प्रोत्साहित करते थे।''

पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य 1969 में शुरू हुआ था और इसके पूरा होने में चार वर्ष लग गए। इस पुस्तकालय को ''लाइब्रेरी ऑफ टिबेटन वर्क्स एंड आर्काइव्स'' के नाम से जाना जाने लगा। लेकिन इसमें सर्वाधिक सहयोग साधारण तिब्बती नागरिकों का रहा, जिनकी बदौलत इसमें पुस्तकों और अन्य पाठन सामग्रियों का अम्बार लग गया। इसमें सहयोग रहा सर्वाधिक गरीब और अधिकारविहीन तिब्बती नागरिकों का, जिन्होंने इसके निर्माण में हर संभव मदद की।

उन दिनों ज्यादातर तिब्बती उत्तर भारत के हिमालयी राज्यों में सड़क किनारे गुजर बसर कर रहे थे, धूल भरे शिविरों में सोते और खाते थे तथा प्रतिदिन अधिक से अधिक तीन रुपये की कमाई करते थे। ज्यादातर कामगार उस तीन रुपयों में से एक रुपया निकालकर रख देते थे। इस राशि को वे पुस्तकालय के निर्माण के लिए दान दे देते थे। कुछ लोग छुट्टी लेकर धर्मशाला पहुंच जाते थे और भवन परियोजना में श्रमदान करते थे। शेरिंग ने कहा, ''उनलोगों ने इसे यह सोचकर तैयार किया कि इसका निर्माण उन्हीं लोगों के लिए किया जा रहा है। ये चीजें अत्यधिक प्रेरणादायी रहीं।''

जैसे ही इस पुस्तकालय को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलनी शुरू हुई, न केवल तिब्बत से, बल्कि मंगोलिया, जर्मनी और अमेरिका से भी सहयोग मिलना शुरू हो गया। लोगों ने अपनी निजी चीजें भी दान कर दी, जिनमें तेरहवें दलाई लामा द्वारा उन्हें या उनके परिजनों को दी गई अनेक वस्तुएं भी शामिल हैं। दुनिया भर के तिब्बती विद्वान और शिक्षाविद धर्मशाला स्थित इस पुस्तकालय में नियमित रूप से आने लगे। त्शेरिंग ने जेफरी हॉपकिन्स, रॉबर्ट थुरमैन, स्टीफन बैचलर, एलन वैलेस एवं एलेक्जेंडर बर्जिन जैसे लोगों को याद किया, जिन्होंने पश्चिमी देशों में तिब्बती बौद्ध आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पुस्तकालय कई प्रकार से महत्वपूर्ण संस्थान साबित हुआ। हमने थांका पेंटिंग स्कूल, काष्ठकला स्कूल, दर्शनशास्त्र स्कूल जैसे संस्थान भी शुरू किए। हमारे पास एक से एक दिग्गज विद्वान थे। उनमें से हर कोई किसी न किसी क्षेत्र का विशेषज्ञ था। दरअसल पुस्तकालय में केवल पुस्तकों को ही संग्रहीत करने की योजना थी, लेकिन तिब्बती नागरिक इतनी सारी मूर्तियां और धार्मिक कलाकृतियां लेकर यहां पहुंच रहे थे कि शेरिंग को एक संग्रहालय खोलने की आवश्यकता महसूस हुई। बाहरी लोगों के लिए यह एक संग्रहालय है, लेकिन तिब्बतियों के लिए यह कुछ और है।

साठ और सत्तर के दशक में तिब्बत जाने और वहां से लौटकर आने वालों से हमेशा यह आग्रह किया जाता रहा कि वे लौटते वक्त प्रमुख पांडुलिपियों का खोया हुआ हिस्सा तलाशकर लाने का प्रयास करें। हालांकि इन चीजों को तिब्बत से यहां लाने के लिए लोगों ने गिरफ्तारी और जेल जाने का जोखिम भी उठाया, लेकिन शेरिंग को जहां तक याद है तो कभी भी इसके लिए किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई थी। उनका मानना है कि अब भी ऐसी महत्वपूर्ण पाठन सामग्रियां और दस्तावेज तिब्बत में लोगों की आलमारियों में धूल फांक रहे हैं। उनमें से कुछ दस्तावेज चीनी अधिकारियों के लिए राजनीतिक रूप से संवेदनशील हैं, लेकिन वे इसे सार्वजनिक नहीं होने देना चाहते।

सिक्किम की मौजूदा राजधानी गंगटोक में 1936 में जन्मे शेरिंग का तिब्बती संस्कृति, खासकर इसके साहित्य, के प्रति काफी लगाव था। शेरिंग 1998 में अमेरिका जाने से पहले तक तिब्बती पुस्तकालय के निदेशक पद को सुशोभित करते रहे। अमेरिका जाने से पहले उन्होंने कहा था, ''मुझे कुछ आराम की जरूरत है।'' वह अपने निजी आध्यात्मिक कार्यों के लिए भी अधिक से अधिक समय चाहते थे। उन्होंने कहा था, ''मैं बहुत ही संतुष्ट हूं कि मैं कुछ करने में सक्षम रहा, जिससे न केवल तिब्बतियों को लाभ मिला बल्कि पूरी दुनिया के लोगों को फायदा पहुंचा। मैं बहुत ही भाग्यशाली व्यक्ति हूं कि मैंने इस तरह का जीवन जिया। मुझे कोई खेद नहीं है। जब मैं मरूंगा तो शांति से मरूंगा।''

ग्यात्शो शेरिंग का निधन गत 25 जून 2009 को 73 वर्ष की अवस्था में हुआ। — **रेबेका नॉविक**

''हम निहायत मुफलिसी और फ़ाकामस्ती में रह रहे थे, लेकिन हमें इसकी परवाह नहीं थी। हम यह नहीं जानते थे कि कल क्या खाएंगे, इसके बावजूद इस योजना पर हमने सारी रकम लगा दी थी। लैम्प का तेल जुटाना हमारे लिए खाने से ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य था। हमारे लिए प्रत्येक दिन उत्साह से ओत–प्रोत था, क्योंकि प्रत्येक दिन हम नयी–नयी और अनोखी पांडुलिपियां ढूंढ निकाल पा रहे थे।''

कैमरे की आं

1. पोलैंड के पूर्व राष्ट्रपति और नोबेल पुरस्कार विजेता तथा उनके पुराने मित्र दल
2. लेह में बंजारा लद्दाखियों के लिए स्थापित जमयांग स्कूल में बच्चों के साथ
3. धर्मशाला में 'थैंक्यू इंडिया' समारोह में प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिपोछे (मध्य) मु
4. 'स्वतंत्र तिब्बत' पर चर्चा के लिए दिल्ली के मजनूं का टीला में बाएं से श्री स्टै
5. भारत तिब्बत सीमा बल ने हिमाचल के गियू गांव में एक वरिष्ठ लामा के 500
6. अमेरिका में बसे तिब्बती परिवारों के बच्चे हर साल गर्मियों में धर्मशाला में रहने
7. धर्मशाला की तिब्बती लाइब्रेरी के जन्मदाता ग्यात्सो शेरिंग का 26 जून को निध
8. जर्मनी के मारबुर्ग नगर ने 4 अगस्त को दलाई लामा को अपनी मानद नागरिक
9. चीनी जेल में बंद तिब्बती युवा फिल्मकार धोंदुप वांगचेन की रिहाई के लिए 31
10. तिब्बती युवा फिल्मकार धोंदुप वांगचेन की रिहाई के लिए 31 जुलाई के प्रदर्शन

♦ आंखों देखी

की आंख से

ने मित्र दलाई लामा की 29 जुलाई को वारसा में भेंट हुई।

के साथ द्रुक्पा टोप पहने दलाई लामा।

(मध्य) मुख्यमंत्री श्री धूमल और दोलमा ग्यारी के साथ।

से श्री स्टैकल, जमयांग नोरबू और जान एंडरसन।

ा के 500 साल पुराने शव के शव की ममी को खोजा है।

ला में रहने और अध्ययन के लिए आते हैं। ऐसे एक दल के साथ दलाई लामा।

न को निधन हुआ। ऐतिहासिक चित्र में वह दलाई लामा के साथ। (श्रद्धांजलि पृ–6,7)

द नागरिकता से सम्मानित किया। नगर पुस्तिका में हस्ताक्षर करते दलाई लामा।

के लिए 31 जुलाई को पांच तिब्बती संगठनों ने अभियान चलाया।

के प्रदर्शन में उनके चित्र के साथ तिब्बती प्रदर्शनकारी।

(फोटो परिचय : ऊपर बाएं से घड़ी की दिशा में)

चेंग्दू में पुलिए एक तिब्बती की तलाशी लेते हुए – उपनिवेशवाद के पंजे

सख्ती के बावजूद तिब्बत में प्रदर्शन जारी

तिब्बत पर चीनी कब्जे के खिलाफ तिब्बती जनता का विरोध छोटे प्रदर्शनों के माध्यम से व्यक्त

17 जुलाई को खम प्रांत में डेगे के निवासी 40 वर्षीय योन्तेन ग्यात्सो ने चामदो खेल स्टेडियम में अकेले ही प्रदर्शन किया। योन्तेन ने स्वतंत्र तिब्बत का झंडा लहराते हुए स्टेडियम का एक पूरा चक्कर लगाया। वहां उपस्थित लोगों ने उसे खूब प्रोत्साहित किया।

काठमांडू, 20 जुलाई तिब्बत से आने वाले समाचारों से स्पष्ट हो रहा है कि वहां चीनी शासन के खिलाफ प्रदर्शनों का सिलसिला जारी है। हालांकि पुलिस और सेना के कड़े शिकंजे के कारण बड़े स्तर के प्रदर्शन बहुत कम हो गए हैं पर तिब्बत की आजादी के समर्थन में लोगों की भावनाएं लगातार किसी न किसी रूप में सामने आ रही हैं। इस सूचनाओं के अनुसार गत वर्ष मार्च में तिब्बत की राजधानी ल्हासा में शुरू हुए और बाद में चीन के तिब्बती बहुल हिस्सों में व्यापक विरोध प्रदर्शनों के बाद पिछले एक वर्ष से अधिक से व्यक्तिगत रूप से और छोटे–छोटे दलों में तिब्बतियों का विरोध प्रदर्शन लगातार जारी है। चीनी सुरक्षाकर्मी दमनात्मक कार्रवाई कर प्रदर्शन को कमजोर करने की कोशिश में जुटे रहते हैं।

गत 28 जून को सिचुआन प्रांत (खम) के जोगोंग स्थित अध्यापक शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय के एक युवक को चामदो शहर में विरोध प्रदर्शन करने के आरोप में हिरासत में लिया गया। लोबसांग न्येन्द्राक (18) दिन में अपने एक साथी के साथ शहर गया, लेकिन बाद में उसने अपने दोस्त को अकेला ही स्कूल लौट जाने को कहा। लोबसांग ने अपने दोस्त से यह बहाना बनाया कि उसे कोई और काम आ गया है। वह अपने साथ थैले में घर से ही नारे वाला एक बैनर और तिब्बत का झंडा बनाकर लाया हुआ था। तिब्बत में इस झंडे पर प्रतिबंध है।

जब उसका दोस्त वहां से रवाना हो गया तब लोबसांग ने बैनर और तिब्बत का प्रतिबंधित राष्ट्रीय झंडा निकाला और स्थानीय बाजार में नारेबाजी करते हुए घूमने लगा। वह चिल्ला–चिल्लाकर बोल रहा था : ''तिब्बत आजाद है'', ''चीन तिब्बत छोड़ो''। सूत्र के अनुसार लोबसांग सीधे चामदो पुलिस स्टेशन की ओर गया और वहां तिब्बतियों से अपील की कि वे उसका साथ दें। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार लोबसांग को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया।

बाद में अगले दिन जब उसके स्कूल के साथियों को यह पता चला कि लोबसांग को हिरासत में ले लिया गया है तो उनमें से छह लोग उसकी रिहाई के लिए चामदो गए। पुलिस द्वारा खाली हाथ लौटाए जाने के बाद सभी स्कूल आ गए और जवाबी व्यापक प्रदर्शन की तैयारी करने लगे, लेकिन विद्यालय के प्राचार्य ने पुलिस को चौकस करके उन लोगों की योजना पर पानी फेर दिया।

17 जुलाई को खम प्रांत में डेगे के निवासी 40 वर्षीय योन्तेन ग्यात्सो ने चामदो खेल स्टेडियम में अकेले ही प्रदर्शन किया। योन्तेन ने स्वतंत्र तिब्बत का झंडा लहराते हुए स्टेडियम का एक पूरा चक्कर लगाया। वहां उपस्थित लोगों ने उसे खूब प्रोत्साहित किया। उस व्यक्ति ने अन्य लोगों से अपील की कि वे तिब्बत की समस्या को लेकर विरोध प्रदर्शन करें। न्यूयार्क में रहने वाली एक तिब्बती महिला आची डोल्मा ने चामदो में अपने सूत्रों के हवाले से इस खबर की पुष्टि की है। आम तौर पर विदेश में रहने वाले तिब्बतियों को तिब्बत के भीतर रहने वाले अपने रिश्तेदारों और मित्रों से फोन के माध्यम से समाचार मिलते हैं।

डोल्मा ने बताया, ''पुलिस का एक दस्ता सायरन बजाता हुआ घटनास्थल पर पहुंचा। पुलिस ने बल प्रयोग किया और वहां से लोग विभिन्न दिशाओं में तितर–बितर होते देखे गए। इस शोर शराबे में प्रदर्शनकारी वहां से फरार होने में सफल रहा।'' उसके बाद चामदो और निकटवर्ती इलाकों में सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त कर दिये गए, जगह–जगह पुलिसकर्मियों को तैनात कर दिया गया। अंततः 21 जुलाई को पुलिस ने योन्तेन को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने अगले दिन चामदो में प्रदर्शन की कुछ घटनाओं की पुष्टि भी की। पुलिस के एक प्रवक्ता ने कहा, ''इन घटनाओं के लिए जिम्मेदार व्यक्ति स्थानीय नागरिक नहीं थे, वे इलाके के बाहर से आए थे।

काठमांडू में तिब्बती प्ररर्शन – दमन के बावजूद

तिब्बतियों के प्रदर्शन रोकने के लिए चीनी प्रतिनिधिमंडल ने नेपाल सरकार को उकसाया

तिब्बती सांसदों ने धर्मशाला जाकर समर्थन व्यक्त किया

काठमांडू – 5 जुलाई नेपाल में तिब्बती शरणार्थियों के एक बार फिर चीन–विरोधी प्रदर्शन शुरू करने से चिंतित चीनी सरकार ने बिना वक्त गंवाए दूसरा उच्च–स्तरीय प्रतिनिधिमंडल काठमांडू भेज दिया। इसका काम नेपाल की नयी सरकार पर तिब्बती प्रदर्शनकारियों को शांत करने के लिए दबाव डालना था।

मीडिया में प्रकाशित खबरों के अनुसार नेपाल में चीन के पूर्व राजदूत एवं कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाईना के मौजूदा पोलित ब्यूरो सदस्य झांग जियुहुआन ने नेपाल की विदेश मंत्री सुजाता कोइराला से मुलाकात कर उन्हें 'मुक्त तिब्बत' को लेकर फिर से शुरू हुए विरोध प्रदर्शनों के संबंध में चीन सरकार की चिंताओं से अवगत कराया।

तिब्बत की सीमा के पास प्रदर्शन कर रहे कई तिब्बती शरणार्थियों को पिछले दिनों नेपाल पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये जाने के महज पांच दिन बाद ही झांग की अध्यक्षता में यह प्रतिनिधिमंडल काठमांडू पहुंचा। आठ महिलाओं सहित कम से कम 35 तिब्बती शरणार्थी 'विरोध मार्च' के इरादे से नेपाल की सीमा पार कर चीन के आधिपत्य वाले तिब्बत में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे थे। विदेश मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार सुश्री कोइराला ने चीनी प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया है कि नेपाल चीन–विरोधी गतिविधियों के लिए अपनी धरती का इस्तेमाल नहीं होने देने को लेकर कटिबद्ध है। कुछ नेपाली सांसदों की धर्मशाला यात्रा को लेकर भी चीन ने चिंता जताई है।

नेपाली सांसदों ने भारत के धर्मशाला शहर में रह रहे निर्वासित तिब्बती समुदाय को आश्वस्त किया था कि काठमांडू लौटने के बाद वे लोग गठबंधन सरकार के प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल से आग्रह करेंगे कि वह दलाई लामा का प्रतिनिधि कार्यालय नेपाल में फिर से खोलने की अनुमति प्रदान करें। वर्ष 1959 के बाद खोला गया दलाई लामा का प्रतिनिधि कार्यालय 2005 में तब बंद करा दिया गया था, जब तत्कालीन नरेश ज्ञानेन्द्र ने तख्ता पलट के दौरान चीन सरकार से मदद मांगी थी। नेपाली सांसदों ने यह भी वादा किया कि वे नेपाल में शरण लेने वाले तिब्बतियों को नये पहचान पत्र उपलब्ध कराने के लिए नेपाल सरकार पर दबाव बनाएंगे।

नेपाल के मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का एक और प्रतिनिधिमंडल इस सप्ताह धर्मशाला गया और वहां उसने परमपावन दलाई लामा तथा निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। स्वदेश लौटने से पहले नेपाली प्रतिनिधिमंडल ने नेपाल में रह रहे तिब्बती शरणार्थियों के मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपना पूरा समर्थन देने की बात कही। चीन के प्रतिनिधिमंडल की नेपाल यात्रा नयी बात नहीं है।

नेपाल की धरती पर 'मुक्त–तिब्बत' से जुड़ी गतिविधियों को प्रभावकारी तरीके से कुचलने के लिए यहां की सरकार पर दबाव डालने के इरादे से चीन अपना सरकारी प्रतिनिधिमंडल नियमित रूप से भेजता रहा है। चीन ने नेपाल की नयी सरकार से अपना सम्पर्क बढ़ाना शुरू कर दिया है और नेपाली लेखकों का एक प्रतिनिधिमंडल चीन सरकार के निमंत्रण पर चीन की यात्रा भी कर चुका है।

श्री झांग ने सुश्री कोइराला और उनके पिता पूर्व प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोइराला को चीन आने का न्यौता दिया। श्री गिरिजा प्रसाद कोइराला नेपाल की राजनीति के महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं। चीन के आधिपत्य वाले तिब्बत में गत वर्ष मार्च में शुरू हुए विरोध प्रदर्शनों को बुरी तरह कुचलने के खिलाफ नेपाल में रह रहे तिब्बती शरणार्थियों ने भी काठमांडू स्थित चीनी दूतावास के सामने विरोध प्रदर्शन किया था।

करीब एक लाख 56 हजार तिब्बती नागरिक निर्वासित जीवन जी रहे हैं, जिनमें से ज्यादातर भारत और नेपाल में हैं। आंकड़े बताते हैं कि नेपाल के काठमांडू और पश्चिमी नेपाल के पोखरा में 20 हजार से अधिक तिब्बती नागरिक निर्वासन में रह रहे हैं।

–फायुल में फुर्बु थिनले की रिपोर्ट पर आधारित

नेपाल में चीन के पूर्व राजदूत एवं कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य झांग जियुहुआन ने नेपाली विदेश मंत्री सुजाता कोइराला से मुलाकात कर उन्हें 'मुक्त तिब्बत' को लेकर फिर से शुरू हुए विरोध प्रदर्शनों के संबंध में चीन सरकार की चिंताओं से अवगत कराया।

दलाई लामा से नेपाली सांसदों की मुलाकात को लेकर नेपाली सरकार बिफरी

तिब्बती प्रदर्शनों पर पाबंदी के बावजूद प्रदर्शन हुए

काठमांडू, 05 जुलाई छह नेपाली सांसदों के एक दल ने भारत में परमपावन दलाई लामा से मुलाकात की। इस पर नेपाली सरकार ने इन सांसदों को यह कहते हुए कड़ी चेतावनी जारी कि सांसद उस तरह की किसी भी गतिविधि से अलग रहें, जिससे चीन और नेपाल के संबंध प्रभावित हों।

मधेशी पीपुल्स राइट्स फोरम (एमपीआरएफ) के सांसद बी पी यादव की अध्यक्षता में छह सांसदों ने धर्मशाला में हाल ही में तिब्बत के पूर्व शासक और बौद्ध आध्यात्मिक गुरू दलाई लामा से मुलाकात की थी। एमपीआरएफ माधव कुमार नेपाल के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार का एक प्रमुख घटक है।

मीडिया में प्रकाशित खबरों के अनुसार, श्री यादव ने दावा किया था कि दलाई लामा ने प्रतिनिधिमंडल को स्वायत्त तिब्बत के लिए जारी उनके संघर्ष में सहयोग करने का आग्रह किया है। नेपाल सरकार पड़ोसी देशों के साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखने और अपनी धरती का इस्तेमाल किसी पड़ोसी देश, खासकर चीन, के खिलाफ गतिविधियां नहीं चलाने के प्रति अपनी वचनबद्धता प्रदर्शित करती आ रही है।

नेपाल के गृह मंत्रालय ने भी लोगों से कहा है कि वे ऐसी किसी गतिविधि में शामिल न हो, जिससे पड़ोसी देशों के साथ नेपाल के रिश्ते को नुकसान पहुंचे। मंत्रालय ने इस तरह की किसी गतिविधि में शामिल पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी भी दी है। नेपाल में करीब 20 हजार तिब्बती शरणार्थी रहते हैं।

चीनी अत्याचारों से बचने और दलाई लामा से मुलाकात करने के इरादे से प्रतिवर्ष लगभग दो हजार तिब्बती चीन की सीमा पार कर नेपाल पहुंचते हैं। पिछले माह नेपाल–चीन सीमा से पुलिस ने तीन कोई तीन दर्जन तिब्बती प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया था। ये प्रदर्शनकारी तिब्बतवासियों पर चीन के उत्पीड़न के खिलाफ प्रदर्शन का प्रयास कर रहे थे।

सांसदों ने भंडाफोड़ की जवाबी धमकी दी

लेकिन अपनी सरकार की धमकियों के जवाब में इन सांसदों ने प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल और सरकार को चेतावनी दी है कि अगर सरकार ने इन धमकियों को बार बार दोहराया या इस पर कोई कार्रवाई की तो वे प्रधानमंत्री के साथ हुई बातचीत का खुलासा कर देंगे।

लेकिन अपनी सरकार की धमकियों के जवाब में इन सांसदों ने प्रधानमंत्री और सरकार को चेतावनी दी है कि अगर सरकार ने इन धमकियों को बार बार दोहराया या इस पर कोई कार्रवाई की तो वे प्रधानमंत्री के साथ हुई बातचीत का खुलासा कर देंगे। सांसदों ने यह कहते हुए चीनी राजदूत से मिलने की सलाह ठुकरा दी कि ''आप देश के प्रधानमंत्री है और राजनयिकों से निपटना आपका काम है। हम ऐसा नहीं करेंगे।''

मधेशी पीपुल्स राइट्स फोरम (एमपीआरएफ) के नेता बी पी यादव के नेतृत्व में संविधान सभा के छह सदस्य और आशा कुमारी सरदार (एमपीआरएफ), ईश्वरदयाल मिश्रा (तराई मधेश डेमोक्रेटिक पार्टी), बिश्वेन्द्र पासवान (दलित जनजाति पार्टी) और रुक्मिणी चौधरी (लोकतांत्रिक राष्ट्रीय मंच) उन लोगों में शामिल हैं, जिन्होंने दलाई लामा से मुलाकात की। श्री पासवान और सुश्री चौधरी के साथ बातचीत में प्रधानमंत्री ने उनलोगों की दलाई लामा से हुई मुलाकात पर कड़ा ऐतराज जताया था।

उन्हें इस बात पर दुख है कि नेपाल सरकार नोबल पुरस्कार विजेता दलाई लामा की तुलना ख्याति श्रेष्ठ की नृशंस हत्या के मुख्य आरोपी बिरेन श्रेष्ठ से करता है। प्रधानमंत्री ने कहा, ''आप सभी ने गंभीर अपराध किया है। यह ख्याति श्रेष्ठ की हत्या के मुख्य आरोपी बिरेन श्रेष्ठ के साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाने जैसा ही अपराध है।''

श्री पासवान के अनुसार, प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल के साथ उनकी बातचीत का अभी एक छोटा हिस्सा ही बाहर आया है। उन्होंने कहा, ''बहुत सारी ऐसी चीजें हैं, जिन्हें हम सार्वजनिक करना चाहते हैं। हमलोग प्रधानमंत्री के काले चेहरे को उजागर करने के लिए एक या दो दिनों में संवाददाता सम्मेलन बुलाने की योजना बना रहे हैं।''

सूत्रों ने बताया कि काठमांडू स्थित चीनी दूतावास ने संविधान सभा के सदस्यों की दलाई लामा से हुई मुलाकात पर कड़ा ऐतराज जताया है। चीन के वरिष्ठ राजनयिकों ने इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल से स्वतः सम्पर्क किया है। सुश्री चौधरी के अनुसार, श्री नेपाल ने कहा है कि आपलोगों की यात्रा ने सरकार को खतरे में डाल दिया है।

सुश्री चौधरी के अनुसार, श्री नेपाल ने उन्हें और श्री पासवान को यहां तक कहा कि उन लोगों को चीनी राजदूत का व्यक्तिगत रूप से सामना करना चाहिए और उनसे बात करनी चाहिए। लेकिन संविधान सभा के सांसदों ने यह कहते हुए राजदूत से मिलने की सलाह ठुकरा दी कि ''आप देश के प्रधानमंत्री है और राजनयिकों से निपटना आपका काम है। हम ऐसा नहीं करेंगे।''

इन नेपाली सांसदों ने कहा, ''यदि मुलाकात करनी ही है तो हम संयुक्त रूप में किसी भी राजनयिक से मिल सकते हैं, व्यक्तिगत तौर पर नहीं।''

संविधान सभा के सदस्यों ने कहा कि उन्हें पता चला है कि उनकी बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री के

आवास पर चीन का एक वरिष्ठ राजनयिक भी मौजूद था, लेकिन जब उनसे इस बात की पुष्टि करने को कहा गया तो वे लोग ऐसा कर न सके। जब प्रधानमंत्री के विदेश मामलों के सलाहकार राजन भट्टाराई और प्रेस सलाहकार विष्णु रिजल से पूछने पर उन्होंने इस बारे में अनभिज्ञता जाहिर की।

विदेश मंत्रालय ने कहा है कि संविधान सभा के सदस्यों की दलाई लामा से कथित मुलाकात की ओर मंत्रालय का ध्यान आकृष्ट हुआ है। मंत्रालय के प्रवक्ता मदन कुमार भट्टाराई ने माई रिपब्लिका डॉट कॉम को दिये साक्षात्कार में कहा, ''इस यात्रा के बारे में सरकार को पूर्व जानकारी नहीं थी और सरकार इस तरह की गतिविधियों को राजनीतिक रूप से गलत कदम करार देती है।''

उन्होंने कहा, ''नेपाल 'एक चीन नीति' का समर्थन करता है और तिब्बत को चीन का अभिन्न अंग मानता है। इसलिए हम किसी भी राजनीतिक दल, संगठन या व्यक्ति से आग्रह करते हैं कि वे इस तरह की गतिविधियों में लिप्त न हों।''

नेपाल ने 'मुक्त तिब्बत' प्रदर्शनों को प्रतिबंधित किया

काठमांडू, 05 जुलाई दलाई लामा के जन्मदिन को ध्यान में रखते हुए नेपाल सरकार ने तिब्बत में चीनी शासन के विरोध में होने वाले सभी प्रकार के प्रदर्शनों पर रोक लगा दी।

गृह मंत्रालय की ओर से जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि चीन के तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र (टीएआर) के खिलाफ सभी प्रकार की गतिविधियां प्रतिबंधित हैं। सभी को ऐसे किसी भी प्रदर्शन में भाग लेने से अलग रहने को कहा गया है।

सरकार का यह आदेश पूर्व–नियोजित 'मुक्त तिब्बत' प्रदर्शन को ध्यान में रखकर जारी हुआ। यह प्रदर्शन राजधानी काठमांडू में सोमवार से निर्धारित था। नेपाल में रहने वाले तिब्बती शरणार्थी हर साल अपने पूर्व शासक और धार्मिक नेता दलाई लामा लामा का जन्मदिन मनाते हैं और चीन विरोधी प्रदर्शन करते हैं। उक्त प्रदर्शन भी इसी सिलसिले में आयोजित किया जा रहा है।

मंत्रालय ने अपनी जमीन पर पड़ोसी देशों के खिलाफ प्रदर्शन की अनुमति नहीं देकर पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबधों के निर्वाह के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है। ज्ञातव्य है कि पिछले कई साल से चीन सरकार को खुश करने के लिए नेपाल सरकार तिब्बतियों के चीन विरोधी प्रदर्शनों पर प्रतिबंध ा लगाती आ रही है। मंत्रालय ने सभी को ऐसी किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेने का आह्वान किया जो पड़ोसी देशों के साथ नेपाल के संबंधों को नुकसान पहुंचा सकते हैं और ऐसा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी भी दी। सरकार ने नेपाल के सांसदों की निर्वासित तिब्बती नेता दलाई लामा के साथ भारत में मुलाकात के बाद 'एक चीन नीति' के पक्ष में अपनी नीति को भी पुनः दोहराया।

प्रतिबंध के बावजूद नेपाल के तिब्बतियों ने मनाया दलाई लामा का जन्मदिन

लेकिन नेपाल सरकार की ओर से जारी इस आदेश के एक ही दिन बाद सैकड़ों तिब्बती नेपाल की राजधानी काठमांडू में दलाई लामा का 74वां जन्मदिन मनाने के लिए सोमवार को एकत्रित हुए।

पुलिस बंदोबस्त के बीच काठमांडू के बाहरी इलाके में स्थित विशाल बौद्ध स्तूप पर संपन्न समारोह में 1,000 से अधिक निर्वासित तिब्बतियों ने भाग लिया।

दलाई लामा के जन्मदिन के बाद फिर से जारी अपने एक अन्य बयान में मंत्रालय ने कहा, ''नेपाल अपने पड़ोसियों के साथ समान और मित्रतापूर्ण संबंध ाों के निर्वाह का इच्छुक है। यह अपने भू–भाग का उपयोग किसी भी मित्र देश के खिलाफ नहीं किए जाने को लेकर भी प्रतिबद्ध है।''

भारत और चीन के बीच स्थित नेपाल 'एक चीन नीति' को स्वीकार करता है, जिसके तहत तिब्बत चीन एक अभिन्न भाग है। नेपाल ने बार–बार कहा है कि वह चीन–विरोधी गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं करेगा, क्योंकि वह चीन के साथ अपने मित्रतापूर्ण संबंधों को संरक्षित रखना चाहता है।

पिछले कुछ साल में ऐसे कई मौके आए हैं जब तिब्बत से भागकर आने वाले तिब्बती शरणार्थियों को नेपाल सरकार ने चीनी सेना के हवाले कर दिया। इसपर नेपाल सरकार को कई बार दुनिया भर के मानवाधिकार संगठनों और सरकारों के विरोध का सामना करना पड़ा है। यूरोपीय संसद के अलावा यूरोप की कई सरकारें नेपाल सरकार को चेतावनी दे चुकी हैं कि वह तिब्बती शरणार्थियों के मानवाधिकारों का उल्लंघन न करे। लेकिन चीन सरकार को रिझाने को उत्सुक सरकार इन नसीहतों और चेतावनियों को नहीं सुनती। यूरोपीय देशों द्वारा आर्थिक सहायता रोकने पर नेपाल को चीन सरकार उसे सहयोग का लालच दिए रहती है।

पिछले कुछ साल में ऐसे कई मौके आए हैं जब तिब्बत से भागकर आने वाले तिब्बती शरणार्थियों को नेपाल सरकार ने चीनी सेना के हवाले कर दिया। इसपर नेपाल सरकार को कई बार अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन और सरकारें चेतावनी दे चुकी हैं कि वह तिब्बती शरणार्थियों के मानवाधिकारों का उल्लंघन न करे। लेकिन चीन सरकार को रिझाने को उत्सुक सरकार इन नसीहतों और चेतावनियों को नहीं सुनती।

कानल्हो में स्कूल से विद्यार्थी निष्कासित

दलाई लामा के खिलाफ अपमानजनक लेख से इलाके के तिब्बती युवाओं के प्रदर्शन

तिब्बत से देरी से आने वाले समाचारों के अनुसार गांसू प्रांत में कानल्हो तिब्बती मिड्ल स्कूल के दो विद्यार्थियों को 19 जून को निष्कासित कर दिया गया। इन दोनों पर यह आरोप है कि उन्होंने 24 अप्रैल के शांतिपूर्ण प्रदर्शन में भाग लिया था। टिबेटन सेंटर फॉर ह्यूमैन राइट्स एंड डेमोक्रेसी (टीसीएचआरडी) ने पुष्ट सूत्रों के हवाले से यह समाचार दिया है।

निष्कासित विद्यार्थियों की पहचान डोल्मा ताशी उर्फ डोल्टा (21) और डोल्मा बुम उर्फ डोलबुम (22) के रूप में हुई है। दोनों गांसु प्रांत के सांगचु काउंटी स्थित सांगखोक शहर के निवासी हैं। यह इलाका तिब्बत के आम्दो प्रांत का है। लेकिन तिब्बत पर चीनी कब्जे के बाद आम्दो और खम के अधिकांश इलाकों को तिब्बत से काटकर आसपास के चीनी प्रांतों में मिला दिया गया था। आम्दो के इस इलाके को गांसू में मिला दिया गया था।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार, उच्च शिक्षा में तिब्बती छात्रों के लिए आरक्षित सीटों को स्कूल अधिकारियों द्वारा चीनी विद्यार्थियों को आवंटित किये जाने के खिलाफ गत 24 अप्रैल को कानल्हो तिब्बती मिड्ल स्कूल के विद्यार्थियों ने शांतिपूर्ण और अहिंसक प्रदर्शन किया था।

टीसीएचआरडी को प्राप्त जानकारी के अनुसार विद्यार्थियों के प्रदर्शन की एक मुख्य वजह 'कानल्हो डेली' में छद्म नाम से प्रकाशित वे लेख भी हैं, जिनमें परमपावन दलाई लामा को 'धोखेबाज और नीच' जैसे अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। एक अन्य लेख 'दलाई लामा अब बच नहीं सकता' न केवल समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ, बल्कि इसे स्कूल के सूचना पट्ट पर भी लगा दिया गया था।

अपने सम्मानित राष्ट्रीय नेता के खिलाफ छवि बिगाड़ने वाले इस अभियान को तिब्बती विद्यार्थियों ने नहीं सहन किया और उन्होंने स्कूल में प्रदर्शन शुरू कर दिया। बाद में नारेबाजी करते हुए यह जलूस काउंटी के मुख्य बाजार वाले इलाके तक पहुंच गया।

ऐसी खबर है कि पब्लिक सिक्यूरिटी ब्यूरो (पीएसबी) के जवानों ने प्रदर्शनकारी विद्यार्थियों को मुख्य बाजार के बाहरी इलाके में रोक दिया। सूत्रों के अनुसार विद्यार्थियों को वापस स्कूल भेज दिया गया और पीएसबी और पीपुल्स आर्म्ड पुलिस (पीएपी) के जवानों ने स्कूल को चारो ओर से घेर लिया और किसी को न अंदर आने की इजाजत दी गई और न बाहर निकलने की। विद्यार्थियों के अभिभावकों को स्कूल में बुलाया गया और उनसे यह गारंटी मांगी गई कि उनके बच्चे भविष्य में इस तरह का कोई प्रदर्शन नहीं करेंगे।

टीसीएचआरडी को प्राप्त जानकारी के अनुसार गत 30 अप्रैल को शांतिपूर्ण प्रदर्शन के आरोप में सांगचु टिबेटन नेशनेलिटी एलिमेंट्री स्कूल के 13 छात्रों को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन उनलोगों को बाद रिहा कर दिया गया। ये प्रदर्शन भी कानल्हो डेली में प्रकाशित अपमानजनक लेख के परिणामस्वरूप किये गए। प्रदर्शनकारियों ने प्रदर्शन के दौरान नारेबाजी की – ''दलाई लामा को बदनाम करना बंद करो।''

हाल के दिनों में कानल्हो क्षेत्र में नियमित अंतराल पर तिब्बतवासियों का विरोध–प्रदर्शन जारी है और इसे सकारात्मक रूप में लेने के बजाय चीनी अधिकारी तरह–तरह के प्रतिबंध थोपने में जुटे हैं। लोगों का मानना है कि चीनी अधिकारियों की ये गतिविधियां न केवल स्थानीय लोगों की इच्छाओं के विरुद्ध है, बल्कि चीन के संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों के खिलाफ भी।

प्रदर्शन की एक मुख्य वजह 'कानल्हो डेली' में छद्म नाम से प्रकाशित वे लेख भी हैं, जिनमें परमपावन दलाई लामा के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। अपने सम्मानित राष्ट्रीय नेता के खिलाफ छवि बिगाड़ने वाले इस अभियान को तिब्बती विद्यार्थियों ने नहीं सहन किया और उन्होंने स्कूल में प्रदर्शन शुरू कर दिया।

लाबरांग मठ से एक भिक्षु हिरासत में

9 जुलाई, टिबेटतन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी (टीसीएचआरडी) को प्राप्त एक पुष्ट सूचना के अनुसार गांसू प्रांत की सांगचू काउंटी में लाबरांग मठ के एक बौद्ध भिक्षु को उसके निवास से इस साल मई में पुलिस उठाकर ले गई।

सायूल केलसंग यात्सू सांगचू काउंटी सायूल गांव का निवासी था। वह लाबरांग मठ का भिक्षु था। अपने अपहरण के समय वह लाबरांग मठ के भाषा स्कूल का विधार्थी था। पब्लिक सिक्युरिटी ब्यूरो सायूल केलसंग यात्सू को उस वक्त उसके आवास से उठाया गया जब ब्यूरो के जवानों ने 22 मई की शाम को मठ में छापा मारा।

सूत्रों के अनुसार, उसके सर को काले कपड़े से ढ़ककर उसे ले जाया गया। उसे उठाये जाने के वास्तविक कारणों का पता नहीं चल पाया है, लेकिन सूत्रों ने केंद्र को बताया कि हो सकता है कि उसका अपहरण पूर्व में राजनीतिक गतिविधियों में उसकी सहभागिता के कारण हुआ हो। लाबरांग काउंटी क्षेत्र पिछले साल एक सर्वाधिक बड़े प्रदर्शन और निरंतर चीन विरोधी अभिव्यक्ति का गवाह रहा है। सायुल

केलसांग यात्सु को उसके लाबरांग मठ के आवास से सुरक्षा बलों द्वारा जानबूझकर उठाए जाने के पहले उसपर नजर रखी जा रही थी। उसका वर्तमान अता पता और शारीरिक कुशलता की अभी कोई जानकारी नहीं है।

लाबरांग मठ से किसी तिब्बती भिक्षु के अगवा किये जाने का यह कोई पहला ज्ञात मामला नहीं है। 14 मई 2009 को इसी मठ के दो भिक्षुओं को एक छापे के दौरान गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तार हुए लोगों का अतापता उनके परिवार को अभी भी नहीं है। टीसीएचआरडी सायुल यात्सु का उसके घर से अगवा किये जाने की कड़ी निंदा करता है। टीसीएचआरडी ने मौलिक अधिकारों के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए बंदी बनाए गए तिब्बती कैदियों की रिहाई के लिए चीनी अधिकारियों से मुलाकात की।

टीसीएचआरडी के बयान में कहा गया है कि यह गहरी चिंता का विषय है कि विशेष रूप से लाबरांग मठ हाल के दिनों में कड़ाई का शिकार रहा है। अभी भी सैकड़ों तिब्बतियों का अता–पता और वर्तमान स्थितियां उनके परिवार और नजदीकी संबंधियों को नहीं मालूम हैं।

बौद्धभिक्षु को आजीवन कारावास

धर्मशाला, 21 जुलाई जो तिब्बती चीन सरकार विरोधी तेवर अपनाते हैं या दलाई लामा की प्रशंसा में विचार अभिव्यक्त करते हैं, उन्हें वकील करने की अनुमति नहीं दी जा रही है। बंद दरवाजों के भीतर मुकदमों की सुनवाई के दौरान उन्हें अपने बचाव के लिए बिना कोई विश्वस्त वकील उपलब्ध कराए उन्हें भारी सजा सुनाई जाती है।

बीजिंग के वकील ली दुनियोंग के अलावा कुछ अन्य वकीलों ने बार–बार यह घोषणा की है कि वे तिब्बतियों के लिए मुकदमा लड़ने को तैयार हैं। उनका नाम लाबरांग मठ के बौद्धभिक्षुओं– त्सुलत्रिम ग्यात्सो और थाबकी ग्यात्सो– के परिजनों ने बचाव पक्ष के वकील रूप में दिया था। लेकिन चीनी अधि ाकारियों ने दुनियोंग को अवगत कराया कि इन दोनों आरोपियों को वकील की जरूरत नहीं है, क्योंकि सरकार ने उन्हें एक वकील उपलब्ध कराया हुआ है। दोनों बौद्धभिक्षुओं को राजनीतिक प्रदर्शन में भाग लेने के लिए गिरफ्तार किया गया है।

बचाव का मौका नहीं पा सके दोनों बौद्धभिक्षुओं को देश को विखंडित करने के आरोप में आजीवन कारावास और 15 साल जेल की सजा दी गई है। रेडियो फ्री एशिया ने कल ऐसे अनेक मामलों की

ल्हासा में चीनी सेना का मार्च – उपनिवेशवादी हथकंडे

खबर दी है, जिनमें तिब्बती आरोपियों को अदालत ने बचाव का मौका नहीं दिया है। चिंघाई की एक अदालत के अधिकारियों ने दुनियोंग को वृत्तचित्र निर्माता धोंदुप वांगचेन के बचाव में भी खड़ा होने की अनुमति नहीं प्रदान की।

वांगचेन को फिल्म ''लीविंग फीयर बिहाइंड' के लिए दो तिब्बतियों का साक्षात्कार करने के आरोप में गत मार्च 2008 से जेल में बंद रखा गया है। इस फिल्म में दलाई लामा पर अनेक चीजें, तिब्बत को लेकर चीन की नीति और बीजिंग ओलम्पिक के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया है। इस फिल्म को सात भाषाओं में अनुदित किया गया है. जिसका प्रदर्शन दुनिया के लगभग 30 देशों में किया जा चुका है। वांगचेन के परिजनों ने दुनियोंग को वकील नियुक्त किया था।

वांगचेन की रिहाई के लिए इस समय दुनिया भर के कई देशों में अभियान चल रहा है जिसमें एमनेस्टी इंटरनेशनल और वर्ल्ड ह्यूमन राइट्स वॉच जैसे सम्मानित संगठन भी शामिल हैं।

इस बीच, टिबेटन सेंटर फॉर ह्यूमैन राइट्स एंड डेमोक्रैसी ने खबर दी है कि कारजे की अदालत ने तीन जुलाई को तिब्बती बौद्धभिक्षु जामयांग तेनजिंग को चीन सरकार द्वारा 2007 में शुरू किये 'देशभक्ति शिक्षा अभियान' के खिलाफ प्रदर्शन करने के आरोप में तीन साल की सजा सुनाई है। जामयांग को तीन अक्टूबर 2007 को योनरु मठ में जारी शिक्षा अभियान का शांतिपूर्वक विरोध करने के कारण गिरफ्तार किया गया था। तब ये वह जेल में है, पर उसके परिजनों को उसकी गिरफ्तारी आदि के बारे में कुछ भी नहीं पता है। यह नहीं ज्ञात हो सका है कि उसे सुनवाई के दौरान कानूनी सहायता मिल भी पाई या नहीं।

बीजिंग के कुछ चीनी वकील तिब्बतियों के लिए मुकदमा लड़ने को तैयार हैं। लेकिन चीनी अधिकारियों ने कहा कि इन आरोपियों को वकील की जरूरत नहीं क्योंकि सरकार ने उन्हें वकील उपलब्ध कराया हुआ है। लेकिन दोनों बौद्ध भिक्षुओं को देश को विखंडित करने के आरोप में आजीवन कारावास और 15 साल जेल की सजा दी गई है।

लेह तक रेल सम्पर्क की मांग के समर्थक हैं थल सेनाध्यक्ष

चीनी खतरे से तैयारी में और कोताही ठीक नहीं

भारत के थल सेनाध्यक्ष जनरल दीपक कपूर ने हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल से मुलाकात की और हिमाचल प्रदेश के रास्ते लेह सीमा को रेलवे से जोड़ने की राज्य सरकार की पहल का समर्थन किया। प्रस्तावित रेल लाइन सभी मौसमों में इस्तेमाल हो सकेगी। जनरल कपूर ने कहा कि यह रेल लाइन राष्ट्रीय सीमा पर संचार नेटवर्क को मजबूत बनाएगी।

श्री धूमल ने कहा कि भानुपल्ली–बिलासपुर–बेरी रेल लाइन के विस्तार के बाद मंडी, कुल्लू, मनाली, केलांग के रास्ते राष्ट्रीय सीमाओं को जोड़ने को लेकर सेना के समर्थन से इस परियोजना के सामरिक महत्व का पता चलता है।

जनरल कपूर ने रोहतांग दर्रे के यथाशीघ्र निर्माण की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा, ''हिमाचल प्रदेश सेना के लिए सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। चूंकि इसकी सीमाएं तिब्बत से लगी हैं और तिब्बत पर चीनी आधिपत्य है।'' उन्होंने कहा कि सभी महत्वपूर्ण सड़कों की निगरानी सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) को सौंप दी जानी चाहिए। यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि गैर–महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बजाय सीमावर्त्ती इलाकों में बेहतर गुणवत्ता वाली सड़कों का निर्माण किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री की मांग पर सेनाध्यक्ष ने कहा कि राज्य में दो नये सैनिक स्कूल खोले जाएंगे और स्थानीय बच्चों को मौजूदा सैनिक स्कूल में प्रवेश दिया जाएगा।

श्री धूमल ने जनरल कपूर से सशस्त्र बलों में हिमाचल प्रदेश के युवकों के लिए भर्ती का कोटा बढाए जाने की भी मांग की। जनरल कपूर और उनकी पत्नी कीर्ति कपूर ने राज्यपाल प्रभा राऊ से भी मुलाकात की तथा शिमला स्थित सैन्य प्रशिक्षण कमान का भी दौरा किया। जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ लेफ्टिनेंट जनरल बी एस बी एस जायसवाल ने सेनाध्यक्ष की अगुवानी की।

भारत में रक्षा विशेषज्ञ इस बात से चिंतित हैं कि भारत की सीमा के उस पार कब्जाए हुए तिब्बत में चीन सरकार ने व्यापक पैमाने पर सड़कों, हवाई अड्डों और छावनियों का जाल बिछा लिया है पर इस ओर भारत ने सीमा को सड़कों से भी नहीं जोड़ा।

जनरल कपूर ने कहा, ''हिमाचल प्रदेश सेना के लिए सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। चूंकि इसकी सीमाएं तिब्बत से लगी हैं और तिब्बत पर चीनी आधिपत्य है।'' भारत में रक्षा विशेषज्ञ इस बात से चिंतित हैं कि भारत की सीमा के उस पार कब्जाए हुए तिब्बत में चीन सरकार ने व्यापक पैमाने पर सड़कों, हवाई अड़डों और छावनियों का जाल बिछा लिया है पर इस ओर भारत ने सीमा को सड़कों से भी नहीं जोड़ा।

दलाई लामा ने काजा में नए साक्य मठ का उद्घाटन किया

फायुल, 09 जुलाई देव भूमि या भगवान की धरती के रूप में प्रसिद्ध हिमाचल प्रदेश की स्पीति घाटी में दलाई लामा ने एक मठ का उद्घाटन किया। 6 जुलाई को 74 साल के हो चुके तिब्बती नेता ने नए साक्या तेनग्यू मठ का उद्घाटन किया, जहां उन्होंने मंडल तेनसुम और दीर्घायु होने की प्रार्थना (तेनसुम) की। इस मौके पर हिमाचल प्रदेष के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल और स्थानीय विधायक डा0 रामलाल मरकंदा भी उपस्थित थे।

स्पीति घाटी के स्थानीय निवासियों ने सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत कर अतिथियों का स्वागत किया। श्रद्धेय खांगसार शब्दरूंग रिंपोछे ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा, ''संतात्माओं के आध्यात्मिक निर्देशों, विश्व ज्योति, ज्ञान के सागर, अपने मौलिक अधिकारों से वंचित लोगों के लिए मसीहा, शाश्वत आनंद के लिए इच्छुक सौभाग्यशालियों, वर्तमान युग के बुद्ध दलाई लामा तेनजिन यात्सू के चरणों में अपनी धार्मिक कृतज्ञता ज्ञापित करने का मुझे मौका मिला, यह बड़े सौभाग्य की बात है।''

ज्ञद्धेय रिंपोछे ने इस अवसर पर दलाई लामा के पधारने और अपना आशीर्वाद देने के लिए धर्मसभा की ओर से उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि जाड़े में भिक्षुओं के लिए गोमिक में तेंग्यू मठ और नागोर खंग्सर गवांग हेंत्सी हुप्तेन यिंग्पो में रहना करीब करीब असंभव था। इसलिए स्थानीय लोगों के अनुरोध पर काज़ा में एक नए मठ का निमार्ण कराया गया। हालांकि दलाई लामा ने उस क्षेत्र का कई बार दौरा किया लेकिन तेंग्यू साक्य मठ में सुविधाओं और आधारभूत संरचनाओं में कमी के कारण अब तक उनका स्वागत नहीं किया जा सका था।

दलाई लामा ने 10 जुलाई को अपना सार्वजनिक प्रवचन दिया। इसके बाद कजा तेंग्यू मठ में 11, 12 जुलाई को अवलोकितेश्वर अभिषेक किया गया।

श्रद्धेय खंगसार रिंपोछे के अनुसार, तेंग्यूड मठ के अनुसार महान अनुवादक लोचेन रिंचेन सांगपो (958-1055) की जीवनी में यह लिखा है कि उन्होंने अपनी मां को समर्पित एक सौ आठ मंदिर और मठों को निर्मित किया। इतिहास और समय प्रमाणित करते हैं कि तेंग्युड साक्य मठ भी उनमें से एक है। शेष गोमिक मठों के अवशेष की खुदाई के दौरान कुछ पुरानी शिल्पकृतियां और और बौद्ध मूर्तियां पाई गई थी और वे ताबो मठ में पहचाने गए थे।